जाड़ा ,गरमी औ बरखा

कट कट कट कट बाजय दांत
मुंह से निकरि न पावै बात
थर थर थर थर कांपी हम
जाड़े महैं ँठिठुरी हम

आसमान से बरसै आग
भुईयां जरे तवा जस लाग
आऊ खाई बरफ मलाई
गरमी आई गरमी आई

बूँद गिरै जब छम छम छम
बिजुरी चमकै चम चम चम
पानी बरसय टप टप टप
चलव नहाई छप छप छप

शब्दार्थ

बाजय-बजना **निकरि**-निकलना **पावै**-पाना **मैहां**-में **बरसै**-बरसे **भुइयां**-जमीन **जस** -जैसे **लाग** -लगना **आऊ**-आईये **खाई**-खाना
बिजुरी-बिजली **चलव**-चलो

अभ्यास

अच्छा बताऊ कौन मौसम-

- राजू **रेनकोट** अपने स्कूल मा छोड़ आवा
- कमलेश **कम्बर** ओढ़ कै सोय गवा
- अम्मा कहिन-बाहर न जाव,**लूक** लाग जाई
- **अच्छा बताऊ कि जाड़ा ,गर्मी बरसात मा का करै का चाही औ का ना करै का चाही**
- जाड़ा
- गर्मी
- बरखा
- जया का जाड़ा मा कुछ दिन के खत्तिर बाहर जाय का है , ऊ अपने झोला मा का का रख लेय

अच्छा बताऊ कि तुमका गरमी मा का खाय पियय कै मन करत है औ सरदी मा का खाय पियय कै मन करत है